पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
स्मृति गुप्ता

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाधाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी से ही है पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - स्मृति गुप्ता

शादियों में फिजूल खर्ची

शादियों में फिजूल खर्ची

प्रस्तावना

शादियों में फिजूल खर्ची आज की बड़ी विकट समस्या बन गयी है, सब के सब भेड़ चाल में बिना सोचे समझे परिणाम की चिंतन किये बगैर अंधी दौड़ में दौड़े चले जा रहे हैं | एक समय था जब शादियाँ दो आत्माओ का मिलन दो लोगों के पवित्र बंधन में बँधने दो परिवारों के मिलने का उत्सव हुआ करता था,लेकिन विगत कुछ वर्षो से ये परिवारिक उत्सव कम दिखावा और बराबरी की होड़ बन कर रह गया है, और इस होड़ में कितने ही लोग बर्बाद भी हो रहे हैं |

फिजूल खर्ची के कारण

दिखावा और प्रतिस्पर्धा ~ पहले शादियों में मेहमान घर आस पड़ोस और धर्मशाला में ठहर जाते थे,आज कल वर्तमान समय में लोग शान शौकत दिखावे और एक दूसरे से आगे, अच्छा और अच्छा करने की होड़ में लगे हैं, यहाँ चाहे बात एक ही परिवार में भाई बहनो के बच्चों की शादी की बात हो या दोस्तों और दूसरे रिश्तेदारों के यहाँ के वैवाहिक कार्यक्रमों की उनसे अच्छा करने के चक्कर में लोग लगे रहते हैं, बड़े बड़े होटल, रिसोर्ट बुक करके लाखों करोड़ों रूपए दिखावे के नाम पर पानी की तरह बहा रहे हैं | एक एक कमरा पांच, छह हजार से कम का नहीं होता, एक कमरे में चार लोग ही रह सकते हैं |

प्लेट सिस्टम~ आज कल बड़े होटेलों में खाना प्रति प्लेट के हिसाब से होता है, किसी भी अच्छी जगह एक प्लेट हजार रूपये से कम की नहीं होती अनगिनत लजीज व्यंजनों से सजी टेबिले जितने ज्यादा व्यंजन उतना ज्यादा पैसा लगता है और खाने वाला चाहे एक चम्मच खाये लेकिन प्लेट उठाते ही पैसे पूरे लग जाते हैं,

कई बार ना समझी में बच्चे या बड़े एक से अधिक प्लेट का इस्तेमाल कर लेते हैं, जिससे नुकसान उठाना पड़ता है, साथ ही अधिक प्लेट की बुकिंग के बाद यदि कम लोग आते हैं तो सारी प्लेटो के पैसे जाया हो जाते हैं |आज कल सभी सेहत का ध्यान रखते हुए भोजन करते हैं ऐसे में खाने वाला अपनी खुराक के हिसाब से ही खाता है मगर व्यंजनों की भीड़ लगा कर होटल वाले खूब जेब भरते हैं और हम दिखावे में पड़ कर अपनी जीवन भर की कमाई एक दिन के भोजन में लुटा देते हैं |

अनावश्यक सजावट~ शादियों में बजट बिगड़ने की बहुत बड़ी वजह अनावश्यक तामझाम और सजावट भी है, हर कार्यक्रम के लिए अलग तरह की सजावट, लाइटिंग, आदि में बहुत ज्यादा पैसा खर्च होता है, कई बार सजावट का सामान बाहर से मंगाए जाते हैं वो और ज्यादा महंगे पड़ते हैं |

वेडिंग प्लानर और थीम ~ आजकल शादी के कार्यक्रमों की रुपरेखा परिवार के बड़े बुजुर्गों और सदस्यों की सलाह मशवरे से तैयार नहीं होती बल्की इस कार्य के लिए मोटी फीस दे कर प्रोफेशनल वेडिंग प्लानर को बुलाया जाता है, जो हर कार्यक्रम मेहंदी, हल्दी, सगाई,जयमाल ,फेरे के लिए सजावट से ले कर महिलाओं पुरषों के कपड़े लत्ते, जेवर, जूतों, केश सज्जा, मैचिंग पर्स, मेकअप सारी चीजों की रूप रेखा तैयार करते हैं, इसमें कार्यक्रम के मुताबिक रंग डिसाइड किये जाते हैं, जिससे घर वालों के साथ साथ मेहमानों पर भी थीम का अतिरिक्त बोझ पड़ता है जो निहायत ही फिजूल खर्ची है |

बैंड बाजे ढोल और आतिशबाजी ~ पहले के समय में सामान्य से बैंड बाजे से बारात सज जाती थी घर में महिलाएं मोहल्ले पड़ोस की महिलाएं मिलकर ढोलक मंजिरे झांझर से गा बजा कर धूमधाम से घर में हो हल्ले का माहौल सजा लेती थीं हसीं मस्ती का मजा ही अलग होता था अब बाहर से आर्केस्टा बुलाई जाती है, महंगी साज सज्जा और मँहगे परिधानों से सुसज्जित बैंड बाजे और ढोल वाले और मँहगी लाइटों से सजी बारात में लाखों रूपये लग जाते हैं | बारात में, बारात के स्वागत में हो या जय माला के समय की जाने वाली आलिशान आतिशबाजी बहुत बड़ी फिजूल खर्ची है |

लेन देन और विदाई का रीवाज~ आज भी पढ़ी लिखी नौकरी पेशा लड़कियों की शादी में भी लेन देन प्रचलन है, जितनी बड़े पद का लड़का उतना बड़ा दहेज़ देना आज भी माता पिता की मजबूरी है, साथ ही इतने खर्चे के बाद विवाह में शामिल होने वाले मेहमानों को दी जाने वाली विदाई, और मिठाइयाँ भी दिखावे के चक्कर में जेब पर अतिरिक्त भार डालती है अब विदाई पहले जैसे साधारण नहीं रह गयी है फिजूल खर्ची बन गयी है |

फिजूल खर्ची का दुष्परिणाम और प्रभाव

भोजन की बर्बादी होटलों की मँहगी प्लेटों में नए नए,लाज़ीज़ व्यंजनों का अम्बार लगा होता है, अलग अलग प्रांतो के नमकीन मीठे व्यंजन लोगों को आकर्षित करते हैं, लोग उन्हें चखने के लिए प्लेट में परोस लेते हैं फिर कोई चीज पसंद नहीं आई या ज्यादा ले ली तो सीधा डस्टबिन में डाल देते हैं ये भोजन के अपमान के साथ भोजन की बर्बादी भी है,जहाँ एक तरफ कितने लोग भूखे सोते हैं कितनों के पास एक वक़्त का भोजन नहीं है वहाँ इस तरह की बर्बादी अत्यंत दुखद और सोचनीय है |

कर्ज का बोझ

दिखावे और बराबरी की होड़ में या कभी कभी अपने से ऊंचे घराने में लड़की ब्याहने की स्तिथि में सामने वाले की इज्जत रखने के लिए हैसियत से बढ़ कर खर्च करने के लिए कर्ज ले कर शादी की जाती है, लड़की को अच्छा घर मिले इसके लिए पूरा परिवार कर्ज के बोझ तले दब जाता है ये बहुत गलत निर्णय होता है, एक बच्चे के भविष्य के लिए बाकी का परिवार अंधकार में डूब जाता है किसी भी माता पिता को किसी भी दिखावे में आ कर ये कदम नहीं उठाना चाहिए |

सामाजिक दबाव~ अपने से अमीर लोगों के सामने अपनी साख बचाने की जुगत एक मध्यम वर्गीय परिवार की कमर तोड़ देती है |कहीं कहीं अमीर रिश्तेदारों की देखा देखी गरीब या कम परिस्थिति के परिवार भी कभी अपनी तो कभी बच्चों की फरमाइश पर उनके बराबर ना सही लेकिन छोटे रूप में वो ही सब करते हैं जो उनके बजट से बाहर हो जाता है और कर्ज लेने के अलावा कोई चारा नहीं बचता एक दिखावा पूरी जिंदगी की जमा पूंजी ले डूबता है |

फिजूल खर्ची से बचने के उपाय~

शादी एक पवित्र दो लोगों का पवित्र मिलन है इसे उत्सव ही बने रहने देना चाहिए विवाह संपन्न होने के बाद किसी के मन में कोई मलाल नहीं रहना चाहिए अन्न, धन, की बर्बादी रोकने के लिए हमें कुछ नियम और कानून बनाने की आवश्यकता है

सिमित मेहमान~

हमें सोच समझ कर मेहमानों को आमंत्रित करना चाहिए जिससे बजट ना बिगड़े |

सिमित व्यंजन~

व्यंजनो की अधिकता से भोजन की बर्बादी होती है, इसलिए अच्छे मगर कम पकवान रख कर बर्बादी से बचा जा सकता है, साथ ही ऐसी जगह का चयन करें जहाँ आप स्वयं के रसोईये से ठेके पर व्यंजन बनवा सकें जिससे प्रति प्लेट के हिसाब किताब का झंझट ना रहे | साथ ही यदि होटल से कार्यक्रम कर रहे हैं तो प्लेटो की गिनती कम बताएं क्यूँकी यदि ज्यादा लोग आ जाते हैं तो प्लेटे और खाने का प्रबंध हो जाता है मगर कम लोगों के आने पर प्लेटे बच जाती हैं पैसे पूरे देने पड़ते हैं जिसमें बहुत आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है |

कानून बना कर~

सामाजिक संगठनों द्वारा कानून बनाया जाये की भोजन के मेनू में क्या क्या रहेगा, कितने लोग बुलाये जायेंगे, किस तरह की व्यवस्था होनी चाहिए जिसे समाज के हर वर्ग को मानना पड़ेगा, जिससे आर्थिक असमानता मिटेगी और मध्यम वर्ग से बोझ हटेगा |

********** **निष्कर्ष** **********

ऊपर वर्णित बिन्दुओ से यह निष्कर्ष निकलता है की शादी दो दिलों और परिवारों का मिलन है एक सुन्दर सामाजिक व्यवस्था है जो जीवन में हर्ष, उल्लास, उमंग से भरने वाला उत्सव है, उसे आत्मीयता, अपनेपन से मिल जुल कर प्रेम पूर्वक पुर्ण करना चाहिए, दिखावे, बराबरी, देखदेखी की होड़ में लग कर फिजूल खर्ची करने से बचना चाहिए | सादगी पूर्वक किया गया समारोह कई कठिन परिस्थितियों से बचने का मार्ग है | आपको अपनी जमा पूंजी यूँ दिखावे में बर्बाद नहीं करना चाहिए, एक दिन के कार्यक्रम में यूँ पैसे बर्बाद करने से अच्छा है यदि आपके पास व्यवस्था है तो उस पैसे को बच्चों के नाम जमा कर दें जो उनके भविष्य में काम आएगा |

- स्मृति गुप्ता

लेखक परिचय

नाम – स्मृति गुप्ता

निवास – जबलपुर

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ........................**स्मृति गुप्ता**........................जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित “**एक लेख प्रतियोगिता**” में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...